कॉटन यूनिवर्सिटी के कार्यक्रम में

माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया का सम्बोधन

दिनांक 30 अक्टूबर 2023, रविवार	समय : 11.25 AM	स्थान : कॉटन यूनिवर्सिटी

- भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़जी व सम्माननीय श्रीमती सुदेश धनखड़ जी,
- असम के मुख्यमंत्री माननीय डॉ. हिमन्त बिश्व शर्मा जी,
- असम सरकार के शिक्षा मंत्री डॉ. रनोज पेगू जी,
- असम सरकार के मुख्य सचिव श्री पवन कुमार बरठाकुर जी,
- पुलिस महानिदेशक श्री जी.पी. सिंह जी,
- कॉटन यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. रमेश चंद्र डेका जी,
- संकाय के डीन, प्राध्यापक गण
- अधिकारी एवं कर्मचारी गण
- उपस्थित मेरे प्यारे विद्यर्थियों

नमस्कार,

कॉटन विश्वविद्यालय में माननीय उपराष्ट्रपति जी की यात्रा के अवसर पर आयोजित समारोह में उपस्थित होकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। मैं यहां उपस्थित उपराष्ट्रपति जी का स्वागत करते हुए विश्वविद्यालय के सभी पदाधिकारियों, संकाय सदस्यों और विद्यार्थियों को अपनी ओर से बधाई देता हूँ। आज के इस विशेष अवसर पर यूनिवर्सिटी में माननीय उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़जी की गरिमामयी उपस्थिति हम सभी के लिए खुशी की बात है।

भारत के उपराष्ट्रपति एवं संसद के उच्च सदन राज्य सभा के माननीय सभापति के पद पर आसीन श्री धनखड़ जी का स्वागत करते हुए हम अपने आपको गौरवान्वित अनुभव कर रहे हैं। हमारा हर्ष और प्रसन्नता इसलिए भी द्विगुणित हो गए हैं कि आप इस सदन के सर्वोच्च एवं गरिमामयी आसन को सुशोभित करने वाले श्री भैरोंसिंह जी शेखावत के बाद राजस्थान विधान सभा के दूसरे पदाधिकारी हैं।

विधिक क्षेत्र की विलक्षण योग्यता के कारण आप भारतीय एवं अनेक अन्तर्राष्ट्रीय विधिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे। आपने संवैधानिक एवं कानूनी मुद्दों पर देश की प्रमुख प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों से अपने निष्णात ज्ञान एवं अध्यवसायी प्रवृत्ति को परिलक्षित किया है।

उपराष्ट्रपति के पद पर आसीन होने से पूर्व आपने पश्चिम बंगाल के राज्यपाल के रूप में अपनी सदाशयता, मधुर व्यवहार, सद्बुद्धि एवं तर्कसंगत युक्तियों द्वारा विषम परिस्थितियों में भी अपने दायित्वों का निवर्हन बड़ी कुशलता से किया है, जो हमें प्रेरित करने वाला है।

जैसा कि सर्वविदित है कॉटन यूनिवर्सिटी असम में उच्च शिक्षा का एक प्रमुख संस्थान है। पूर्व में कॉटन कॉलेज के नाम से लोकप्रिय इस संस्थान की स्थापना 1901 में तत्कालीन ब्रिटिश प्रांत असम के मुख्य आयुक्त हेनरी स्टेडमैन कॉटन द्वारा की गई थी। इस कॉलेज की शुरुआत में पांच प्रोफेसर और 39 छात्र शामिल थे। यह कॉलेज भारत के एक विशिष्ट अभिन्न अंग के रूप में असम की पहचान बनाने के लिए स्वतंत्रता आंदोलन और राज्य के साहित्यिक और सांस्कृतिक आंदोलनों का एक ऐसा केन्द्र रहा, जिसने असम का नाम जगजाहिर किया।

16 अक्टूबर 1992 को इस कॉलेज को शिक्षा का उत्कृष्ट केन्द्र घोषित किया गया था। कॉटन कॉलेज ने 27 मई 2001 से 26 मई 2022 तक अपना शताब्दी वर्ष मनाया। इस एक वर्षीय शताब्दी समारोह की याद में 25 मई, 2002 को इंडिया पोस्ट ने एक स्मारक डाक टिकट जारी किया था।

वर्ष 2011 में असम सरकार के एक अधिनियम के तहत कॉटन कॉलेज स्टेट यूनिवर्सिटी की स्थापना की गई थी। कॉटन यूनिवर्सिटी 2017 में कॉटन यूनिवर्सिटी अधिनियम, 2017 के माध्यम से अस्तित्व में आई। विगत में यहां कॉटन कॉलेज को उत्कृष्टता का केन्द्र घोषित करने के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा तथा शताब्दी वर्ष के समापन समारोह में तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री कृष्णकांत ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई थी।

कॉटन विश्वविद्यालय अपनी शैक्षणिक गुणवत्ता और उत्कृष्टता को बनाए रखने के लिए निरंतर प्रयासरत है। इसीलिए आज देश के विशिष्ट शैक्षिक संस्थानों में कॉटन विश्वविद्यालय की एक अलग पहचान है। यह एक ऐसी संस्थान है, जिसका वर्ष 1901 में ही बीजारोपण हुआ था और आज वह पल्लवित और पुष्पित होकर लाखों लोगों को ज्ञानामृत दे रहा है।

मुझे खुशी है कि इस संस्थान से शिक्षा पाने वाले अनगिनत छात्र आज विश्व के अनेक देशों में उच्च पदों पर बैठे हुए हैं। यह हम सभी के लिए संतोष और गर्व का विषय है।

प्रिय विद्यार्थियों,

आप सभी देश के भविष्य हैं। आने वाले समय में आपको ही देश की जिम्मेदारियां उठानी हैं। आप जानते हैं कि हमारे ऋषियों ने उपनिषदों में 'तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मामृतं गमय' की प्रार्थना की है। यानी, हम अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ें। मृत्यु से, परेशानियों से अमृत की ओर बढ़ें। अमृत और अमरत्व का रास्ता बिना ज्ञान के प्रकाशित नहीं होता। इसलिए, अमृतकाल का ये समय हमारे ज्ञान, शोध और इनोवेशन का समय है। हमें एक ऐसा भारत बनाना है, जिसकी जड़ें प्राचीन परम्पराओं और विरासत से जुड़ी होंगी, और जिसका विस्तार आधुनिकता के आकाश में अनंत तक होगा।

हमें अपनी संस्कृति, अपनी सभ्यता, अपने संस्कारों को जीवंत रखना है, अपने स्वर्णिम अतीत को, अपनी विविधता को संरक्षित और संवर्धित करना है, और साथ ही, टेक्नोलॉजी, इनफ्रास्ट्रक्चर, एजुकेशन, हेल्थ की व्यवस्थाओं को निरंतर आधुनिक भी बनाना है।

देवियों और सज्जनों,

शिक्षा का उद्देश्य मात्र किताबी ज्ञान प्राप्त करना या धनार्जन नहीं है, इसका उद्देश्य बहुत बड़ा है। स्वामी विवेकानन्द के ये शब्द बहुत महत्वपूर्ण है, जो उन्होंने युवकों से कहे थे - "जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण कर सकें, मनुष्य बन सकें, चरित्र गठन कर सकें और वैचारिक सामंजस्य स्थापित कर सकें, वही वास्तव में शिक्षा कहलाने योग्य है। यदि तुम इन भावों को पचाकर तद्नुरूप जीवन और चरित्र गठित कर सके हो, तो तुम्हारी शिक्षा उस आदमी की अपेक्षा बहुत अधिक है, जिसने एक पूरे पुस्तकालय को कंठस्थ कर रखा है।"

आज ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जिससे निरन्तर सीखने और ज्ञान के अनुरूप अपने आपको ढालने की योग्यता विकसित की हो। सीखने के साथ ही यह भी जरूरी है कि विद्यार्थी चुनौतियों का सामना करने के लिए भी तत्पर रहें तथा स्वयं अपने मार्गदर्शक मूल्यों और लक्ष्यों का निर्धारण करें।

महर्षि अरविन्द का कहना है कि शिक्षक बगिया का वह चतुर माली है जो अपने संस्कारों की सहायता से विद्यार्थियों में मानवीय संस्कृति का सृजन कर राष्ट्रीय चेतना का विकास करता है। शिक्षक विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए ज्ञान, कर्म और भाव-संवेदना के क्षेत्र में शिक्षित कर राष्ट्रीय चेतना की भावभूमि तैयार करते हैं। राष्ट्रीय चेतना की ऊर्जावान मानसिकता ही अवांछनीय सामाजिक गतिविधियों पर नियंत्रण रख सकती है।

संसार में मानव और मानवीय मूल्य सर्वोपरि हैं। हमारे देश का सौभाग्य है कि यहाँ ऐसी विभूतियाँ विद्यमान रही हैं, जिन्होंने मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध रहते हुए समाज और राष्ट्रहित में अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया।

ऐसे एक नहीं अनेक उदाहरण हैं, जिनमें सफलता का श्रेय चरित्र एवं मूल्यों को दिया जाता है, चाहे वह व्यापार हो, शिक्षा हो, खेल हो या स्वस्थ राजनीति। चरित्र ही भाग्य है, यह हमारे उन महापुरुषों के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिलक्षित होता है, जिन्होंने ऐतिहासिक कार्य किये हैं।

महात्मा गाँधी, स्वामी विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती जैसे महापुरुष अब नहीं रहे, जिनके चरित्र और व्यक्तित्व से सम्पूर्ण राष्ट्र प्रभावित होता था।

ऐसी स्थिति में पथ-प्रदर्शक महापुरुषों की प्रतीक्षा करने के बजाये हमें अपने भविष्य को सजाने-संवारने का काम अपने हाथों में लेना होगा। राष्ट्र निर्माण के लिए आज चरित्र निर्माण, सद्भाव और एकता की भावना को सुदृढ़ करने की सर्वाधिक जरूरत है।

आत्मनिर्भर एवं आधुनिक भारत के निर्माण में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की महती भूमिका रहेगी। देश की वर्तमान एवं भावी आवश्यकताओं के मद्देनजर नई शिक्षा नीति की सौगात तो हमें मिल चुकी है, अब इसका सफल क्रियान्वयन शैक्षणिक जगत के लिए एक चुनौती है। हमें इस चुनौती को स्वीकार करना होगा।

भारत सरकार ने 2017 में अंतरिक्ष वैज्ञानिक डॉ. के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में एक नौ सदस्यीय कमेटी का गठन किया। कस्तूरीरंगन कमेटी की अनुशंसाएँ एवं प्राप्त सुझावों के आधार पर 29 जुलाई 2020 को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति: 2020 की घोषणा की।

नई शिक्षा नीति में शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग की सिफारिश की गई है। यह एक क्रान्तिकारी कदम है। इस शिक्षा नीति में भारतीय संस्कृति एवं दर्शन के महत्व को स्वीकार करते हुए इस पर शोध की आवश्यकता बताई गई है, जिससे हमारे देश की समृद्ध विरासत का लाभ आने वाली पीढ़ियों को मिल सके।

देश के युवाओं को यहाँ की अद्‌वितीय कला, भाषा और परम्पराओं के बारे में ज्ञानवान बनाना राष्ट्रीय गौरव एवं आत्मविश्वास की दृष्टि से अति आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पुरातन और परिवर्तन का अदभुत संगम है।

आज के अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगी बाजार में आर्थिक विकास की बुनियाद शोध है। नई "शिक्षा नीति में नेशनल रिसर्च फाउण्डेशन की स्थापना तथा प्रतिवर्ष 20 हजार करोड़ रुपए का प्रावधान स्वागत योग्य है। यह भारत में शोध कार्य हेतु एक नियामक संस्था होगी।

मल्टीपल एन्ट्री (Multiple Entry) और मल्टीपल एग्जिट (Multiple Exit) नई शिक्षा नीति के महत्वपूर्ण भाग है। एकेडेमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (ABC) की सफल क्रियान्विति के लिए शिक्षकों, छात्रों और उनके अभिभावकों को इसे समझना होगा। इसी प्रकार कोर्स आउटकम (CO), प्रोग्राम आउटकम (PO) और लर्निंग आउटकम (LO) के सभी पहलू छात्रों को अच्छी तरह समझना आप सबी शिक्षकों का दायित्व होगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कौशल शिक्षा को काफी महत्वपूर्ण माना गया है। इसकी क्रियान्विति वास्तव में हो यह भी आपको देखना होगा।

नई शिक्षा नीति में उच्च शिक्षा में गुणात्मक सुधार की दृष्टि से

इंटर्नशिप (Internship) का प्रभावी क्रियान्वयन,

शिक्षा का अन्तर्राष्ट्रीयकरण,

शोध कार्यों में सुधार एवं प्रगति,

इन्टर डिसिप्लिनरी (Inter-Disciplinary) प्रणाली का प्रभावी क्रियान्वयन,

शिक्षकों को निर्धारित मापदण्डों के अनुसार चयन,

क्रेडिट अंकों की व्यवस्था,

डिजिटल शिक्षा का प्रसार

जैसे महत्वपूर्ण क्रान्तिकारी सुधार किए गए हैं।

लेकिन इन सभी सुधारों की सफलता आप सभी शिक्षकों पर निर्भर है। इसलिए आप सभी से मैं अपील करता हूं कि राष्ट्रीय शिक्षा के सफल क्रियान्वयन के लिए अपना महत्वपर्ण योगदान दें।

मित्रों,

हमारे और राष्ट्र के सपने अलग-अलग नहीं हैं, हमारी निजी और राष्ट्रीय सफलताएँ अलग-अलग नहीं हैं। राष्ट्र की प्रगति में ही हमारी प्रगति है। हमसे ही राष्ट्र का अस्तित्व है, और राष्ट्र से ही हमारा अस्तित्व है। ये भाव, ये बोध नए भारत के निर्माण में हम भारतवासियों की सबसे बड़ी ताकत बन रहा है।

अमृतकाल का ये समय, सोते हुए सपने देखने का नहीं बल्कि जागृत होकर अपने संकल्प पूरे करने का है। आने वाले 25 साल, परिश्रम, त्याग व समर्पण के 25 वर्ष हैं। सैकड़ों वर्षों की गुलामी में हमारे समाज ने जो गंवाया है, ये 25 वर्ष का कालखंड, उसे दोबारा प्राप्त करने का है। इसलिए आजादी के इस अमृत काल में हमारा ध्यान भविष्य पर ही केंद्रित होना चाहिए।

अंत में मैं एक बार इस कार्यक्रम में आमंत्रित करने के लिए कॉटन यनिवर्सिटी को धन्यवाद देता हूं।

जय हिन्द।